युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की चतुर्थ पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह (दिनांक 23सितम्बर से 29सितम्बर,2018 तक)

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 29 सितम्बर। **युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 49वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज** की चतुर्थ पुण्यतिथि समारोह में **राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज** की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए अपने **अध्यक्षीय उद्बोधन में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज** ने अपने गुरू को श्रद्धान्जलि देते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज समन्वय, सहनशीलता, संस्कार, प्रखर–राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा की प्रतिमूर्ति थे। गोरखनाथ मन्दिर के स्वरूप का जो खाका महन्त दिग्वजयनाथ जी महाराज ने तैयार किया, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने उसे पूर्ण किया। मध्यकाल में इस पीठ ने अनेक झंझावट झेले है। विदेशी आक्रान्ताओं का यह मन्दिर शिकार हुआ। किन्तु महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने इसके पुराने वैभव को प्राप्त किया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने उसे और भव्य स्वरूप दिया। शिक्षा, स्वास्थ्य को सेवा का साधन बनाकर इस पीठ ने जन सेवा को ही भगवान की सेवा मानकर कार्य किया है। 48 शिक्षण–प्रशिक्षण, स्वास्थ्य एवं सेवा के संस्थान मन्दिर द्वारा संचालित है। महन्त अवेद्यनाथ जी महराज ने भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति में प्रतिष्ठित धर्म–स्थलों की भूमिका को वर्तमान युग में साक्षात् प्रस्तुत किया। श्रीराम जन्मभूमि के साथ इस पीठ का जुड़ाव बहुत पहले से है। उन्होंने आगे कहा कि सांस्कृतिक भारत की पुर्नप्रतिष्ठा का युग प्रारम्भ हो चुका है। उसका पूर्वाभास देश की जनता को हो रहा है। एक नये युग के भारत की आहत आप सभी को सुनाई दे रही होगी। किन्तु देश की जनता सरकार के द्वारा किये जा रहे प्रयत्नों के साथ खड़ी हो और हम एक साथ मिलकर भारत को परमवैभव का प्रतिष्ठित स्थान दिलाएं। भारत के प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता अपना स्पष्ट आकार ले रही है। उन्होंने भारत के ऋषि परम्परा के प्रसार के योग को अर्न्तराष्ट्रीय मान्यता दिलाई। भारत की सनातन कुम्भ की परम्परा को युनेस्को द्वारा दुनियां की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर की मान्यता दिलाई है। आयुष्मान भारत के अन्तर्गत देश के 50 करोड़ गरीब परिवारों को एक वर्ष में 5 लाख रूप्ये की निःशुल्क चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराने का अद्वितीय निर्णय लिया है यह दुनिया की सबसे बड़ी चिकित्सा योजना है। 4 करोड़ परिवारों को विद्युत कनेक्शन दिये गये है। करोड़ो परिवारों को आवास उपलब्ध करा दिये गये है। यह बदलते भारत की वहीं तस्वीर है जिसकी परिकल्पना हिन्दुव और राष्ट्रीयता के प्रबल पक्षधर मेरे गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज किया करते थे। वर्तमान कुम्भ हम संतो को और दुनिया की जनता को गंगा में निर्मल अविरल जल देंगे। उन्होनें कहा कि राम भारत की आस्था के विषय है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य मन्दिर बनें यह समाज राष्ट्र तय करेगा किन्तु रामराज्य की स्थापना तो हम अपने पुरूषार्थ से कर सकते है। सन्त–महात्मा और देश की जनता रामराज्य को चरितार्थ करने के लिए सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चले, सरकार अपना काम प्रारम्भ कर चुकी है। राम को रोटी से जोड़कर हर गरीब को रोटी, आवास, कपड़ा, दवाई, बिजली, पानी और सुरक्षा जैसे मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना ही होगा तभी रामराज्य आ सकता है। भगवान श्रीराम के भव्य मन्दिर के साथ–साथ ऐसे रामराज्य की स्थापना हो सकें।

महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन से जुड़े रहे। वे कहा करते थे कि समाज में यदि छुआछूत पाप नहीं है तो कुछ भी पाप नहीं है। भारत को महाशक्ति बनने के लिए अपनी सामाजिक विकृतियों से मुक्ति पानी होगी। सामाजिक सामूहिकता के बल पर ही राष्ट्रशक्ति खड़ी की जा सकती है। इस युग में सामाजिक समरता के वे अग्रदूत थे। उन्होंने आगे कहा कि श्रीगोरक्षपीठ अध्यात्मिक और सामाजिक पीठ है यही इसकी

विशिष्ट पहचान है और गुरू जी ने अपना पूरा जीवन सनानत धर्म, हिन्दू संरक्षण, शिक्षा, स्वास्थ्य, समतामूलक समाज दीन–दुःखियों के चेहरे पर खुशी लाने और श्रीरामजन्म भूमि मुक्ति के लिए समर्पित कर दिया। देश सेवा, धर्म, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के प्रति वे पूर्ण समर्पित थे। सनातन हिन्दू धर्म के लिए उन्होंने पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि मैं हिन्दू समाज को यह आश्वस्त करता हूँ कि श्रीगोरक्षपीठ की राष्ट्र रक्षा का मंत्र हमारे जीवन का मंत्र है। हिन्दू समाज की सेवा और जिन आदर्शो एवं मूल्यों को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं मेरे गुरूदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने स्थापित किया है उनके प्रति गोरक्षपीठ सदैव समर्पित रहेगा और हम उसे आगे बढ़ाते रहेंगे। सामाजिक एकता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के गुरूदेव सदैव पक्षधर थे। बृहद हिन्दू समाज की एकता ही उनकी सांसारिक उद्देश्य की साधना थी और श्रीगोरक्षपीठ इसे मंत्र मानकर आगे बढ़ता रहेगा।

जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानन्द जी महाराज कहा कि राष्ट्र–सन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज भारतीय संस्कृति, हिन्दू चिन्तक, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक समरसता के अग्रदूत थे। श्रीगोरखनाथ मन्दिर भारत की संस्कृति, संस्कारों और परम्परा का मन्दिर है। उन्होंने कहा यह पीठ धन्य है, जहाँ ऐसे सन्तों ने अपनी कर्मस्थली बनायी। महन्त अवेद्यनाथ महाराज ने एक ऐसे भारत का स्वप्न देखा जहाँ राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता, हिन्दुत्व और विकास दिखायी दे। वर्तमान उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री आज एक युवा सन्यासी है जिसपर भारत के सन्त समाज को गर्व है। वह इसी पीठ की तपस्या का प्रतिफल है। ऐसा हिन्दू सन्यासी जो बिना किसी भेदभाव के सभी के साथ एक समान व्यवहार करते हुए लोककल्याण के भगीरथ पथ पर चल पड़ा है। प्रदेश में परिवर्तन की जो आध्यात्मिक लहर जो प्रारम्भ हुई है वह निश्चित ही लोक कल्याणकारी एवं लोक मंगल सिद्ध होगी।

श्रीराम जन्म भूमि न्यास के अध्यक्ष मणिराम छावनी, अयोध्या के महन्त नृत्यगोपालदास जी महाराज ने कहा कि देश के सनातन धर्म, हिन्दुत्व, सामाजिक समरसता, रामजन्मभूमि मुक्ति और पूर्वांन्चल के शैक्षिक प्रगति के नये आयाम दोनों ब्रह्मलीन महन्त जी ने प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज, महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज से लेकर अब महन्त योगी आदित्यनाथ तक, को हिन्दुत्व का संरक्षण विरासत में प्राप्त हुई है। गोरक्षपीठ ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को सजोकर रखने एवं देश को धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेतृत्व दिया। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज हम सभी साधु–सन्त समाज के सर्वमान्य धर्म नेता थे। नाथ पंथ के इस महान तपस्वी के जीवन में सम्पूर्ण सनातन धर्म दिखता था। उन्होंने कहा कि मैं महन्त जी से सन् 1971 से जुड़ा रहा हूँ। महन्त जी जैसा महापुरूष नहीं देखा, गोरक्षपीठ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत से केन्द्र की सरकार ने रामलला की मूर्ति हटाने को कहा तो गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर से हजारों भक्तों को लेकर वहॉ उस स्थान को घेर लिया और आज तक रामलला की मूर्ति हटाने की किसी को साहस नहीं हुआ। रामजन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन को गति देने के लिए महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने इसकी अध्यक्षता स्वीकार की और उनके नेतृत्व में आन्दोलन चला।

जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी ने कहा कि जो लोग धर्म और धर्मनिरपेक्षता और धर्मस्थानों के आपसी सम्बंधों पर अनेक प्रश्न खड़ा करते है ऐसे लोगों को धर्म समझने के लिए इस गोरक्षपीठ में आकर देखना चाहिए। उन्हें धर्म का वास्तविक अर्थ समझ में आ जायेगा। धर्म की भारतीय अवधारणा को इस पीठ ने व्यवहारिक रूप में जमीन पर उतारा है। इस पीठ ने समाज को यह बताया है कि भारत के हिन्दु सनातन संस्कृति का मठ और मन्दिर कैसा होता है। समाज को उस मठ–मन्दिर से क्या अपेक्षाएं होती है और मठ–मन्दिर समाज को क्या देते हैं। श्रीगोरक्षनाथ मन्दिर भारत में आदर्श मन्दिर का उदाहरण है। जहॉ तक धर्म और राजनीति का प्रश्न का है उसके साक्षात् प्रमाण भगवान कृष्ण है जिन्होंने धर्म के साथ राजनीति के बल पर ही विकसित समाज स्वावलम्बी राष्ट्र की पुर्नप्रतिष्ठा की थी। दुनियां के चार बड़े देशों के बाद आबादी का सबसे बड़ा उत्तर प्रदेश का नेतृत्व आज इस पीठ के हाथ में ही है।

भारत सरकार के पूर्व गृहराज्य मंत्री परमार्थ आश्रम, हरिद्वार के स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने कहा कि देश सर्वोत्तम प्रदेश बनाने का जो प्रयत्न मुख्यमंत्री के रूप में महन्त योगी आदित्यनाथ जी कर रहे है वह इस पीठ की राष्ट्र एवं समाज के प्रति संकल्पित धारणा का ही प्रतिफल है। महन्त

अवेद्यनाथ जी महाराज के साथ लोक सभा में कार्य करने का मुझे सौभाग्य मिला था। उनका स्वअनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा, जन सरोकारों के प्रति जवाबदेही, धर्म की राजनीति में प्रतिष्ठा के प्रयत्न, समाज के असहाय, गरीब, दलित, पीड़ित के प्रति उनकी छटपटाहट हम सबको प्रेरणा देती थी। उन्होंने भारतीय संस्कृति के 'चरैवेति–चरैवेति' मंत्र को अपने जीवन में उतारा था। उनको वास्तविक श्रद्धांजलि यहीं होगी कि हम भी स्वयं, परिवार, समाज एवं देश के लिए चलते रहें–चलते रहें– चलते रहें। महायोगी गोरखनाथ की यह तपःस्थली लोक कल्याण, राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण और सांस्कृतिक पुर्नजागरण को समर्पित है। इस पीठ ने एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस पीठ ने देश ही नहीं दुनियां के धार्मिक केन्द्रो को मार्ग दिखाया है।

श्रद्धांजलि सभा में **जगद्गुरू अनंतानन्द द्वाराचार्य स्वामी डॉ0 रामकमलदास जी वेदान्ती** ने कहा कि धर्म के दो आयाम लौकिक और परमार्थिक दोनों को आदर्श रूप में हिन्दू समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए महन्त जी ने निरन्तर प्रयत्न किया और हिन्दू समाज का मार्गदर्शन किया। इन्ही दिव्यात्माओं से प्रेरणा लेकर अपने अन्तरंग एवं बहिरंग को शुद्ध कर हिन्दू समाज की सेवा एवं मानवता का कल्याण हम अपने जीवन का लक्ष्य बनाये। यहीं इन सन्तों को वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी ने कहा कि गोरखनाथ का भव्य मन्दिर महन्त दिग्विजयनाथ जी की देन है। महन्त अवेद्यनाथ जी कुशल राजनीतिक, सामाजिक समरसता के ध्वजवाहक और रूढ़िवादिता के विरूद्ध संघर्ष करने वाले सन्त थे। ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज सनातन हिन्दू धर्म के पथप्रदर्शक थे। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने पूर्वान्चल में शिक्षा का जो अभियान महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना कर चलाया था उसे ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने विस्तारित किया। समाज की शक्ति संगठन में है और अवेद्यनाथ जी महाराज ने समाज को संगठित करके शक्तिशाली बनाया।

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के सहप्रान्त प्रचारक श्री सुभाष जी ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के सर्वमान्य धार्मिक नेता महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज बनें। क्योकि वे पांथिक परम्पराओं से ऊपर राष्ट्रधर्म के सच्चे आराधक थे। वे निर्भय, नीडर, स्पष्टवादी धर्मात्मा थे। सच के साथ दृढ़ता से खड़ा होना उनकी विशेषता थी। वे सहृदय अभिभावक थे। करूणा की वे मूर्ति थे। उनका जीवन संत समाज को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

इस अवसर पर **सिद्ध योग पत्रिका के सम्पादक सिद्ध गुफा सवाई आगरा के ब्रह्मचारी दासलाल जी** ने ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए कहा कि महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज एक ऐसे महात्मा थे जिन्होंने हिन्दू धर्म संस्कृति के सभी पंथो के प्रति समन्वय का भाव रखते हुए हिन्दू समाज की एकता का अद्वितीय कार्य किया।

इस अवसर पर श्रद्धाजलि देने वालों में नैमिषारण्य से पधारे **स्वामी विद्या चैतन्य जी महाराज,** अरैल, प्रयाग से पधारे स्वामी **गोपाल जी महाराज, कटक उड़ीसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी, अयोध्या से पधारे श्रीधराचार्य जी महाराज, जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी, उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग के अध्यक्ष प्रो0 ईश्वरशरण विश्वकर्मा,** हरिद्वार से पधारे **महन्त शान्तिनाथ** जी, मुख्य पुजारी, श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर के **योगी कमलनाथ जी महाराज,** देवीपाटन मन्दिर, तुलसीपुर से पधारे **महन्त मिथलेशनाथ** जी महाराज, कालीबाड़ी, गोरखपुर के **महन्त श्री रवीन्द्रदास जी महाराज,** श्री हनुमान मन्दिर गोरखनाथ के **महन्त श्री प्रेमदास जी महाराज,** अयोध्या से पधारे **महन्त राममिलनदास** जी, चचाईमठ के **महन्त पंचाननपुरी** जी सहित अनेक धर्माचार्यो के साथ विविध सामाजिक–सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने अपनी–अपनी श्रद्धांजलि दी।

कार्यक्रम का प्रारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ। श्री रंगनाथ त्रिपाठी ने वैदिक मंगलाचरण, गोरक्षाष्ठक पाठ पुनीत पाण्डेय व प्रियांशु चौबे तथा डॉ0 प्रांगेश मिश्र ने महन्त अवेद्यनाथ स्त्रोतपाठ प्रस्तुत किया। महाराणा प्रताप बालिका विद्यालय एवं महाराणा कन्या इण्टर कालेज, रामदत्तपुर की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना एवं श्रद्धान्जलि गीत प्रस्तुत की गयी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह ने किया।